



शुष्क बागवानी समाचार



भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

बीछवाल- बीकानेर- 334006 (राजस्थान)

अंक 17, क्रमांक- 01

जनवरी-जून, 2017

बागवानी विज्ञान विभाग के नए उप महानिदेशक



डॉ. ए.के. सिंह ने दिनांक 27.05.2017 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान) के पद का कार्यभार ग्रहण किया। उन्होंने अपनी एम. एससी. और पीएचडी की शिक्षा आईसीएआर-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पुसा, नई दिल्ली पूरी करने के बाद पोस्ट डॉक्टरेट प्रोग्राम सागा विश्वविद्यालय, जापान और यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया, यूएसए से पूर्ण किया। आरंभिक रूप में, आपने टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली (1991-98) में कार्य किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में आपने आईसीएआर-आईआईवीआर, वाराणसी, यूपी (1998-2000) तथा आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली (2000-2006) में कार्य किया। वर्ष 2006-2015 तक आप आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली में प्रधान वैज्ञानिक और अध्यक्ष, फल और बागवानी तकनीकी विभाग के पद पर कार्यरत रहे। इससे पूर्व आपने राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के प्रबंध निदेशक, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड और कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय बीजीय तेल और वनस्पति तेल विकास (एनओवीओडी) बोर्ड, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के रूप में भी कार्यरत थे। आनुवंशिक सुधार, पादप ऊतक संवर्धन, बागवानी फसलों की पौध आणविक जीव विज्ञान, फल फसलों के ट्रांसक्रिप्टम विश्लेषण आदि प्रमुख रूप से आपके शोध के क्षेत्र रहे हैं। आपने प्रमुख अनुसंधान कार्यों का नेतृत्व करते हुए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाओं में 112 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। आपको विभिन्न संस्थाओं ने कई पुरस्कारों से अलंकृत किया है जिनमें, जापानी सरकार द्वारा प्रदत्त मोम्बूशो पुरस्कार, भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संगठन, जापान का विजिटिंग वैज्ञानिक और डीबीटी ओवरसीज एसोसिएट्सशिप पुरस्कार शामिल हैं। आपके नाम विजिटिंग साइंटिस्ट, सागा यूनिवर्सिटी, जापान, भारतीय बागवानी समिति का स्वर्ण पदक, कृषि-बागवानी समिति, दिल्ली का स्वर्ण पदक, अंतर्राष्ट्रीय कुलसचिव-मैगिफेरा (मैंगो), नोमेनकल्चर एण्ड कल्टीवर रजिस्ट्रेशन, आईएसएचएस, यू.के. (2007-2015), बागवानी सोसाइटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के फेलो (2008), पर्वतीय बागवानी विकास सोसाइटी, उत्तराखण्ड (2005) और नेशनल एकेडमी ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज (2012) का सम्मान आदि भी शामिल हैं। केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान परिवार, का दृढ़ विश्वास है कि आपके दूरदर्शी और गतिशील नेतृत्व के अंतर्गत बागवानी विज्ञान विकास की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा।



माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार श्री राधा गोहन जी और अन्य गणमान्य व्यक्ति एसकेआरएयू, बीकानेर में दिनांक 18-20 फरवरी 2017 के दौरान आयोजित पश्चिमी क्षेत्र कृषि मेला में संस्थान द्वारा लगायी गयी प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए तथा संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) पी. ए.ल. सरोज उनको तकनीकियों की जानकारी देते हुए।



अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्र फल समन्वित परियोजना की वार्षिक बैठक में मंचासीन डॉ. ए. के. सिंह, उप महानिदेशक (प्रसार शिक्षा एवं बागवानी विज्ञान), प्रो. वी. आर. छीया, माननीय कुलपति, स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, डॉ. वसाखा सिंह डिल्ली, राहायक महानिदेशक (बागवानी विज्ञान) एवं प्रो. पी. ए.ल. सरोज, निदेशक, गाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर।

शुष्क बागवानी समाचार

अनुसंधान ज्योति

हरितगृह परिस्थितियों में ऊक्तक संवर्धित सब्जी प्रकार की नागफणी (कैटटस पीअर) का आकारिक और पोषण महत्व का मूल्यांकन: कैटटस के सब्जी प्रकार (मांसल प्रकार) जननप्रकार मानव उपभोग के लिए बेहतर है क्योंकि इसमें उच्च स्तर के बीटैलेस, टॉरिन, कैलिशयम, मैग्नीशियम और एंटीऑक्सिडेंट होते हैं जो पोषणोष्ठीय और

मानव स्वास्थ्य दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। भाकृअनुप-केशुबासं, बीकानेर में हरितगृह परिस्थितियों में सब्जी प्रकार कैटटस (नागफणी) की वृद्धि और विकास पर आ.तिगत मूल्यांकन किया गया। यह देखा गया कि सब्जी प्रकार कैटटस के नॉपल्स (कोमल सब्जी प्रकार कैटटस पीअर के पौधे।



चित्र : हरितगृह में ऊक्तक संवर्धित कैटटस के नॉपल्स (कोमल सब्जी प्रकार कैटटस पीअर के पौधे।

पतिया) 10 से 15 सेमी लंबाई और लगभग 30 ग्राम/नॉपल का औसत वजन के होने पर 15–20 दिनों के अंतराल पर नियमित रूप से तुड़ाई की जा सकती है। यह 1.5 किलोग्राम कोमल नॉपल्स/पौधा/वर्ष औसत उपज प्रदान कर सकते हैं। कैटटस के एक पौधे ने एक महीने में ऊपर वर्णित विशेषताओं के 5 नॉपल्स उत्पन्न किए। इन कैटटस नैपल का उनके पोषण संबंधी संरचना के लिए मूल्यांकन किया गया था। इसमें 91–93 प्रतिशत नमी और शुष्क पदार्थ 7–9 प्रतिशत, राख 13–15 प्रतिशत (डीडल्यूबी) और 1.0 प्रतिशत (डल्ल्यू डल्ल्यूबी), म्यूसीज 15–22 प्रतिशत डीडल्यूबी, कुल फिनोलिक्स 4.5–7.0 प्रतिशत (डीडल्यूबी), लेवोनोइड 190–220 माइक्रोग्राम / ग्राम और कुल एंटीऑक्सिडेंट गतिविधि 10–16 मिग्रा. विटामिन सी / जी (डीडल्यूबी) के बराबर पाया गया (डॉ. कमलेश कुमार, डॉ. एम.के. बेरवाल और डॉ. डी. सिंह)।

आलू की विभिन्न बेहतर किस्मों की पहचान और उनके प्रदर्शन पर अध्ययन: पश्चिमी राजस्थान की कठोर जलवायी में आलू की विभिन्न बेहतर किस्मों की पहचान और प्रदर्शन के आधार पर प्रसंस्करण तथा सब्जी के लिये उपयुक्त प्रजाति की पहचान पर भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर में कार्य किया गया। वर्ष 2016–17 के रवी (सर्दी) मौसम के दौरान आलू की सात प्रजातियों जैसे— कुफरी ख्याति,



चित्र: आलू की विभिन्न किस्मों के प्रक्षेत्र का दृश्य

कुफरी गरिमा, कुफरी चिपसोना-4, कुफरी पुखराज, कुफरी फाईसोना, कुफरी सूर्या और कुफरी ज्योति को फव्वारा के साथ ही बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली के अंतर्गत लगाया गया। फव्वारा सिंचाई के तहत सबसे अधिक उपज कुफरी चिपसोना-4 (534.8 किंवं/हेक्टेयर), कुफरी फाईसोना (479.7 किंवं/हेक्टेयर) और कुफरी ज्योति (465.1 किंवं/हेक्टेयर) में दर्ज की गयी। बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली के तहत, कुफरी फ्राईसोना में सबसे अधिक उपज (435.37 किंवं/हेक्टेयर) दर्ज की गयी। इसमें न्यूनतम उपज कुफरी पुखराज (203.99 किंवं/हेक्टेयर) और कुफरी ज्योति (344.58 किंवं/हेक्टेयर) में देखी गयी। प्रसंस्करण किस्मों में कुफरी चिपसोना-4 और कुफरी फ्राईसोना को उपयुक्त माना जाता है और शुष्क सामग्री की अधिकता के साथ यह किस्में गम सुष्क क्षेत्र में भी सबसे उपयुक्त दर्ज की गयी। कुफरी गरिमा और ज्योति प्रजातियों ने इस क्षेत्र में अधिक उपज दी है जो उत्तर पश्चिमी राजस्थान में प्रसंस्करण और सब्जी के लिए भी उपयुक्त हो सकती हैं (डॉ. एम.के. जाटव और डॉ. पी. एल. सरोज)

काचरी आधारित करी चूर्ण का विकास: काचरी गर्म शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की सूखा सहिष्णु अवप्रयोगी सब्जी फसल है जो, खासकर पश्चिमी राजस्थान के थार रेगिस्तानी क्षेत्रों में उगायी जाती है। उत्तर-

पश्चिम भारत के विभिन्न परंपरागत व्यंजनों में काचरी चूर्ण का उपयोग खटाई देने के लिये भी किया जाता है। इसलिए, विभिन्न पोषक तत्वों के समिश्रण से तुरंत उपयोग करने वाला काचरी आधारित करी चूर्ण विकसित करने एक प्रयास किया गया था। इस उत्पाद की मूल सामग्री के रूप में काचरी चूर्ण उपयोग में लिया गया था।

अन्य सामग्री में सहजन के पत्तों का चूर्ण, करी पत्तों का चूर्ण, सूखी फूटककड़ी (खेलरे), धनिया, जीरा, मेथी, अजवाइन, सौंफ, कालीमिर्च, सरसों और दालबीनी का प्रयोग किया गया था। इस उत्पाद को बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए इन घटकों के अनुपात का मानकी.त किया गया है (डॉ. एस.वी.आर. रेड्डी, डॉ. डी.के. समादिया एवं डॉ. आर.के. मीना)



चित्र: तुरंत प्रयोग में लिये जाने वाला करी चूर्ण के घटक

पोषक तत्वों के कार्बनिक और अकार्बनिक स्रोत का उपयोग करते हुए संतरे के बगीचे में अंतरासस्य के रूप में काचरी फसल के प्रदर्शन का अध्ययन: काचरी वनस्पति इकाई क्षेत्र में अधिक शुक्र पदार्थ का उत्पादन करती है और नीबूवर्गीय बाग में अंतरासस्य के लिये यह एक सर्वोत्तम फसल है। एकीकृत पोषण प्रबंधन के द्वारा मिट्टी की उर्वरता को



चित्र: नीबू के साथ काचरी का अंतरासस्य

बनाए रखने के साथ ही काचरी उत्पादकता के उच्च स्तर को प्राप्त करने में पोषक तत्वों के कार्बनिक और अकार्बनिक स्रोतों का सबसे कुशल उपयोग और प्रबंधन किया जा सकता है। कार्बनिक और अकार्बनिक स्रोत के बराबर अनुपात (50 प्रतिशत एनपीके अकार्बनिक उर्वरक से) में बेल की अधिकतम लंबाई (समी), शाखाओं की संख्या, फल / पौधे और काचरी के फल उत्पादन / पौधा (ग्रा / पौधा) अधिकतम प्राप्त किया गया। पचास प्रतिशत एन.पी.के. अकार्बनिक उर्वरक से और 15 टन/हेक्टेयर गोबरखाद से उच्चतम काचरी उपज (114.47 किंवं/हेक्टेयर) दर्ज किया, जो अन्य सभी उपचारों से अधिक था। (डॉ. एम.के. जाटव और डॉ. एस. आर. मीना)।

सुरंग आवरण में खेती: कद्दूवर्गीय फसलों के लिए परिस्थिति अनुरूप तकनीक: गर्म शुष्क क्षेत्र में, सुरंगी आवरण में की जाने वाली खेती कम लागत में गुणवत्ता युक्त उत्पादन प्राप्त करने का सर्वोत्तम विकल्प है। यह तकनीक जनवरी-फरवरी के दौरान होने वाले कम तापमान से फसल को बचाकर उसे को 45–50 दिनों तक अग्रेती कर देती है। सुरंगी आवरण के अंदर कार्बन डाइऑक्साइड की संकेंद्रता बढ़ती है, जिससे प्रकाश संश्लेषण गतिविधियां और अंततः उपज में वृद्धि होती है। शुष्क क्षेत्र में सुरंग प्रौद्योगिकी की सफलता में स्थान का चयन, बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली, उर्वरक और एकी.त फसल प्रबंधन (आईसीएम) क्रियाओं का बड़ा महत्व होता है। सुरंग की ऊंचाई बढ़ाने के लिए 45–60 सेंटीमीटर गहरी खाई तैयार करने की सिफारिश की जाती है, ताकि सुरंग के भीतर का तापमान बाहर से 8–10° से. अधिक हो। बुवाई का सबसे अच्छा समय



चित्र: सुरंग आवरण में कद्दूवर्गीय फसलों की खेती

दिसंबर के अंतिम सप्ताह से जनवरी के पहले सप्ताह तक दर्ज किया गया। आवरण सामग्री के रूप में 30–50 माइक्रोन के जैवक्षरित प्लास्टिक शीट को सुझाया जाता है। फरवरी के दूसरे या तीसरे सप्ताह में जब बाहर का तापमान बढ़ जाए (10–12° से.) तब प्लास्टिक की शीट परी तरह से हटा दी जानी चाहिए। यह देखा गया कि गर्म शुष्क क्षेत्र में खरबूजा, ककड़ी, तरबूज, लोकी, तोरई, टिंडा, ग्रीष्म स्वर्वैश इत्यादि की सुरंग आवरण में की गयी खेती से बीःसी अनुपात 2.21 से 2.43 के साथ सफलता पूर्वक समय पूर्व उत्पादन लिया जा सकता है (डॉ. बी.आर. चौधरी और डॉ. ए.के. वर्मा)।

शहतूत में आकारिक लक्षणों का वित्रण करने के लिये पर्ण विन्यास एक विधि के रूप में: संस्थान के शहतूत जननद्रव्य खण्ड पर उपलब्ध 10 शहतूत जननप्रकारों में पर्ण विन्यास में विभिन्नता दर्ज की गई। इनके पर्ण विन्यास या तो वैकल्पिक या सर्पिल थे। सर्पिल पर्ण विन्यास 1/2, 1/3 या 3/8 के क्रम में थे। इस प्रकार, शहतूत में लक्षण वर्णन के लिए पर्ण विन्यास एक रूपात्मक विशेषता के रूप में माना जा सकता है (डॉ. हरेकृष्ण और डॉ. धुरेन्द्र सिंह)।

राजभाषा गतिविधियाँ

हिन्दी कार्यशाला आयोजन : इस अवधि के दौरान प्रथम तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 30 मार्च, 2017 को किया गया। इसमें ‘राजभाषा अधिनियम और नियम’ की जानकारी दी गयी। दूसरी तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 29 जून, 2017 को किया गया। इसमें राजभाषा कार्यान्वयन पर व्याख्यान दिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक : इस अवधि के दौरान संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही के आधार पर आयोजित की जाने वाली बैठकों में इस छःमाही की पहली बैठक का आयोजन दिनांक 28 मार्च, 2017 को तथा दूसरी बैठक का आयोजन दिनांक 29 जून 2017 को किया गया।

कृषिविस्तार कार्यक्रम/गतिविधियाँ

इस अवधि में कुल 04 किसान प्रशिक्षण, 372 किसानों, छात्रों और कृषि पर्यवेक्षकों, अधिकारी, पेशेवर, शिक्षक, वैज्ञानिक / प्रशिक्षुओं को भ्रमण कराया गया और 100 से अधिक किसानों के खेतों का दौरा किया गया। किसानों के 08 समूहों के संस्थान में अपने ज्ञानवर्धन भ्रमण के दौरान आठ शोध-विस्तार –किसानों –आपसी विचार विमर्श बैठकों को आयोजित किया गया। संस्थान द्वारा विकसित तकनीकियों की तीन प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

खेतीहर महिलाओं का सशक्तिकरण: गर्म शुष्क क्षेत्र की शुष्क बागवानी फसल उत्पादन के बारे में खेतीहर महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में स्थानीय गांवों की 100 से अधिक खेतीहर महिलाओं को संस्थान में भ्रमण कराया और उनके साथ अनुसंधान-विस्तार—किसान—इंटरफेस की बैठकें आयोजित की गयी। उनके भ्रमण के दौरान संस्थान की तकनीकियों का प्रदर्शन और शुष्क बागवानी फसल उत्पादन की आधुनिक तकनीकों, सूखे फल और सब्जियों की मूल्यवर्धन तकनीकों, आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी (डॉ. एस. आर. मीना, डॉ. आर.एस. सिंह, डॉ. डी. के. समादिया और डॉ. डी. के. सरोलिया)।

मेरा गांव मेरा गौरव कार्यक्रम : रिपोर्ट की अवधि के दौरान 18 दौरे, 57 ऑनलाइन मार्गदर्शन, 52 प्रक्षेत्र मार्गदर्शन, 34 विधि प्रदर्शन, 01 फार्म दिवस और 02 किसान की प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अपनाए गांवों यथा—राजस्थान में बीकानेर जिले के खिचिया गांव, सराहरूपायत, धोलेरा, बच्चासर और कोलासर गांवों में आयोजित किया गये।

सप्ताह/दिवस आदि का आयोजन

दिनांक 25 अप्रैल, 2017 को स्थानपना दिवस समारोह आयोजन: प्रस्तुत अवधि के दौरान 25 अप्रैल 2017 को संस्थान का 24 वां स्थानपना दिवस को समारोह पूर्वक मनाया गया। पदम विभूषण डॉ. आर.एस. परोदा, पूर्व सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग एवं महानिदेशक, भाकृअनुप, नयी दिल्ली समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रोफेसर बी.आर. छीपा, कुलपति, एसकेआरएयू बीकानेर विशिष्ट अतिथि और प्रोफेसर भागीरथ



चित्रः पदमभूषण डॉ. राजेन्द्र सिंह परोदा, पूर्व सचिव, डेयर और महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली, प्रोफेसर बी.आर. छीपा, कुलपति, एसकेआरएयू बीकानेर, प्रो. भगीरथ सिंह, कुलपति, एमजीएसयू बीकानेर और प्रो. पी.एल. सरोज, निदेशक, भाकृअनुप—केशुबास, बीकानेर

सिंह, कुलपति, एमजीएसयू बीकानेर सम्मानीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह में डीन, निदेशक, प्रोफेसर, छात्र-छात्राओं और प्रगतिशील किसानों सहित 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) पी.एल. सरोज ने संस्थान के शोध और विकास गतिविधियों का एक संक्षिप्त व्यौरा प्रस्तुत किया। उपस्थिति अतिथियों ने संस्थान में किए गए अनुसंधान और विकास गतिविधियों की प्रगति की सराहना की। इस अवसर पर डॉ. परोदा ने जोर देकर कहा कि किसानों की आय में वृद्धि के लिए स्थानीय फसल प्रजातियों और जल उपयोग दक्षता के लिए शोध पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और संगोष्ठी का आयोजन: दिनांक 21–06–2017 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम श्रीमती फूसी देवी योग और नैयुरोपैथी संस्थान, बीकानेर के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर संस्थान में ‘योग प्राकृतिक चिकित्सा एवं सात्त्विक आहार’ विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बीकानेर



चित्रः योग दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में गंवारीन प्रो. बी.आर.छीपा, माननीय कुलपति, एसकेआरएयू बीकानेर, सम्मानीय महंत श्री क्षमाराम जी महाराज, पीठाधीश्वरी, सीथल पीठ, बीकानेर, प्रो. पी.एल. सरोज, निदेशक, भाकृअनुप—केशुबास और डॉ. देवाराम काकड़, निदेशक श्रीमती फूसीदेवी योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, बीकानेर।

में स्थित भाकृअनुप संस्थानों के निदेशक, अध्यक्ष, एसकेआरएयू के अधिष्ठाता, प्राध्यापकों सहित 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रो. बी.आर. छीपा, माननीय कुलपति, एसकेआरएयू बीकानेर मुख्य अतिथि और महंत श्री क्षमारामजी महाराज, सिंथल पीठ, बीकानेर समारोह के अध्यक्ष थे। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) पी.एल. सरोज कहा कि नियमित योग और संतुलित आहार सकारात्मक विचारों के साथ स्वस्थ और लंबे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्वच्छ भारत अभियान: इस अवधि के दौरान संस्थान में समय—समय पर स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत संस्थान के कार्मिकों ने परिसर की साफ—सफाई कर इसे स्वच्छ बनाया।

गणमान्य व्यक्तियों का संस्थान में भ्रमण

अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली का भ्रमण : कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. गुरबचन सिंह ने दिनांक 21 जनवरी 2017 को संस्थान का भ्रमण कर यहां चल रहे अनुसंधान कार्यों का अवलोकन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने डिग्री न. 04 का उद्घाटन भी किया।



चित्र: डॉ. गुरबन सिंह, अध्यक्ष, कृॱ॒मबो.., नई दिल्ली संस्थान में डिग्री क्र.04 को उद्घाटन करते हुए, साथ में संस्थान के निदेशक प्रो. पी.एल.सरोज।

महत्वपूर्ण बैठकों का आयोजन

पंचवर्षीय समीक्षा बैठक

संस्थान में दिनांक 17-18 मई 2017 को पूर्व उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान) डॉ. एच.पी.सिंह की अध्यक्षता में क्यूआरटी बैठक आयोजित की गई थी। डॉ. ए.के.मेहता, डॉ. मथुरा राय, डॉ. एन.कुमार, डॉ. एस.कुमार, प्रो. पी.एल.सरोज सदस्य के रूप में और डॉ. बी.डी.शर्मा, सदस्य सचिव के रूप में बैठक में उपस्थित थे। पंचवर्षीय समीक्षा समिति ने संस्थान के वर्ष 2011 से 2017 तक के कार्यों की समीक्षा की तथा महत्वपूर्ण सुझाव दिये।



चित्र : क्यूआरटी अध्यक्ष डॉ. एच.पी.सिंह, पूर्व उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान) भाकृअनुप, नई दिल्ली सदस्यों एवं संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ बैठक करते हुए।

अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्र समन्वित अनुसंधान परियोजना की वार्षिक बैठक: अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्र फल समन्वित अनुसंधान परियोजना की 21वीं वार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 5-7 मार्च 2017 के दौरान किया गया। इस अवसर पर परियोजना के 18 केन्द्रों के 50 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक का उद्घाटन डॉ. ए.के.सिंह, उप महानिदेशक (प्रसार शिक्षा एवं बागवानी विज्ञान) भाकृअनुप, नई दिल्ली ने किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. पी.एल.सरोज ने परियोजना के एक वर्ष के कार्यों का व्यौरा प्रस्तुत किया।

कार्मिक उपलब्धियाँ

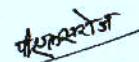
पुरस्कार मान्यता / सम्मान

- दिनांक 08.01.2017 को आईआईएचआर, बैंगलुरु में आयोजित संगोष्ठी के दौरान प्रो. (डॉ.) पी.एल.सरोज ने उत्पादन प्रबंधन पर तकनीकी सत्र के दौरान पैनलिस्ट के रूप में कार्य किया।
- संस्थान के निदेशक ने एसआरबी, आईसीएआर, नई दिल्ली में 23-24 जनवरी, 2017 को एक साक्षात्कार में सदस्य के रूप में कार्य किया।
- डॉ. एस.वी.आर.रेण्डी, को नेशनल सेमीनार ऑन जीरो हंगर चेलेन्ज-फॉर हंगर फ्री इंडिया, राजकीय बालिका महाविद्यालय, गूतूर, आंध्रप्रदेश में बेस्ट ऑरल पेपर के लिए सर्वोत्तम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- संस्थान के निदेशक ने 1 फरवरी, 2017 को एसआरबी, आईसीएआर, नई दिल्ली में एक साक्षात्कार में सदस्य के रूप में कार्य किया।
- संस्थान के निदेशक ने 02 फरवरी, 2017 को अध्यक्ष, सेक की बैठक, केवीके, पंचमहल (गुजरात) के रूप में कार्य किया।

निदेशक की कलम से.....



भाकृअनुप—केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर राजस्थान के इस छःमाही समाचार पत्र को प्रकाशित करने में मुझे बेहद खुशी है। संस्थान की स्थापना के बाद से ही, भाकृअनुप—केशुबासं देश के गर्म शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में विभिन्न पर्यावरणीय, शैक्षिक और जैविक बाधाएं जिनसे इन क्षेत्रों का बागवानी उत्पादन सीमित होता है, को पार पाने हेतु उपयुक्त रणनीति विकसित करने के लिए अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को आगे बढ़ा रहा है। संस्थान जैविक और अजैविक दबावों की स्थिति में भी उच्च गुणवत्ता युक्त उपज देने वाली किसीमें सुधार और उपज बढ़ाने तथा प्रतिदाब को कम करने के लिए बागवानी क्रियाओं के विकास के लिए सक्रिय रूप से अनुसंधान गतिविधियाँ संचालित करता है। संस्थान का दीर्घकालिक लक्ष्य देश के गर्म शुष्क और अर्ध-शुष्क भागों के हजारों हेक्टेयर में फैली हुई बंजर और अनुत्पादक भूमि को हरे-भरे बागानों में परिवर्तित करना है ताकि यहां के निवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया जा सके। संस्थान ने गर्म शुष्क और अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में बागवानी विकास को बढ़ावा देने के लिए कई बागवानी तकनीकों, किरमों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित किए हैं। यह उन्नत प्रौद्योगिकियाँ नियमित रूप से किसानों को उनकी कृषि आय को दोगुणी करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रसारित की जाती हैं। पिछले छः महीनों के दौरान संस्थान द्वारा किए गए प्रमुख अनुसंधान कार्यों को संक्षेप में इस समाचार पत्र के माध्यम से प्रसारित की जा रही है।


(पा.ए.ल.सरोज)
निदेशक

प्रकाशक

: प्रो. पी.ए.ल.सरोज, निदेशक,
भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी
संस्थान, बीकानेर (राजस्थान)

संकलन एवं सम्पादन

: डॉ. शिवराम मीना डॉ. राकेश भारद्वाज
डॉ. रमाशंकर मिंह डॉ. हरेकृष्ण
डॉ. डी.के.सरोलिया डॉ. एस.एम.हलदार
डॉ. एम.के.बरवाल श्री पी.पी.पारीक

डिजायनिंग

: श्री भोजराज खत्री

छायाचित्रण

: श्री संजय पाटिल